IJAER/ May-June 2023/Volume-12/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

जयप्रकाश कर्दम जी के साहित्य में में दलित विमर्श

अक्कम्मा वनहल्ली

शोधार्थी - विभाग - हिंदी

कर्नाटक राज्य महिला विश्वविद्यालय

विजयपुर , कर्नाटका

प्रोफेसर नामदेव गौड़ा

कर्नाटक राज्य महिला विश्वविद्यालय

विजयपुर , कर्नाटका

सार

जयप्रकाश कर्दम एक प्रसिद्ध दलित कहानीकार हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से दलितों के जीवन की बारीकियों को प्रकट किया है। उन्होंने दलित समाज की समस्याओं, उनकी पहचान की अहमियत, जातिवाद के खिलाफ लड़ाई और समाज में बदलाव के लिए जोश और संघर्ष को अपनी कहानियों में दर्शाया है।

जयप्रकाश कर्दम की कहानियाँ व्यापक रूप से दलित जाति के विषय में होती हैं, जहाँ उन्होंने दलित समाज की समस्याओं, उनके अधिकारों की कमी, सामाजिक अन्याय और उनके व्यक्तित्व की पहचान को उजागर किया है। उनकी कहानियाँ गहराई से भारतीय समाज की बेअदबी, भेदभाव, जातिवाद, स्त्री प्रताड़ना, अपराध और संघर्ष को छूने वाली कथाएँ हैं।

जयप्रकाश कर्दम की कहानियों में दलित चरित्रों को मजबूती से दिखाया गया है, जो ईमानदारी,साहस और स्वाभिमान के प्रतीक होते हैं। उनकी कहानियाँ एक संवेदनशील तार्किकता, सुंदरता और संवेदनशीलता के साथ बनी होती हैं, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं। उनकी कहानियों में दलित समुदाय के लोगों की सच्ची जीवन यात्रा और उनके आंतरिक आवाज को प्रदर्शित किया जाता है।

जयप्रकाश कर्दम ने अपने लेखनी के माध्यम से दलित समाज को जागृत करने, सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ाने और समाज में समरसता और समानता का बोध कराने का कार्य किया है। उनकी कहानियाँ दलित समुदाय को अपनी पहचान के प्रति गर्व और आत्मविश्वास प्रदान करती हैं, जो उन्हें समाज में समानता और समरसता की दिशा में अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती हैं।

उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से दलित समाज की आवाज बनाने का कार्य किया है, जिसने समाज में जातिवाद, अन्याय और दुर्घटनाओं को उजागर किया है। उनकी कहानियों में उदात्तता, विचारशीलता और अद्वितीयता की गहराई होती है, जो उन्हें दलित समाज के मुद्दों को समझने और समाधान के लिए संघर्ष करने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत बनाती है।

मुख्यशब्द: दलित विमर्श, दलित चेतना

परिचय

जयप्रकाश की कहानियों में सवर्णों द्वारा हो रहे हैं, दलितों के शोषण के बारे में लिखा गया है। दलितों के शोषण के चित्र जयप्रकाश कर्दम की कहानियों में विभिन्न रूपों में दिखाई देताहै।दलित समुदाय के लोगों को सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर बनाने के लिए आर्थिक संपत्ति, संपत्ति, और सामाजिक सुरक्षा से वंचित रखा जाता है।दलितों को शारीरिक उत्पीड़न और अत्याचार का सामना करना पड़ता है। अकसर दलित स्त्रियाँबलात्कार शिकार होती हैं।

सामाजिक प्रतिष्ठा की कमी: दलितों को अकसर सामाजिक प्रतिष्ठा, अवसाद और समाज में अलगाव का सामना करना पड़ता है। उन्हें सामाजिक आयोजनों, सेवाओं, धार्मिक स्थलों और शिक्षा संस्थानों से अलग किया जाता है।

शोषण के अनेक प्रकारों में धार्मिक शोषण भी आता है।धार्मिक शोषण एक सामाजिक मानसिकता का प्रतिबिम्ब है जहां धर्म का उपयोग विभिन्न समुदायों या जातियों को उत्पीड़ित करने के लिए किया जाता है। यह विचार अस्थायी संकल्पों, धार्मिक विरोध, धार्मिक भेदभाव और अपमानपूर्ण आचरणों के कारण जाति, सामाजिक दर्जे और सम्मान के माध्यम से लोगों को उत्पीड़ित करता है। इसमें धार्मिक स्थलों में प्रवेश से वंचित करना, धार्मिक समारोहों में विभाजन करना, धार्मिक लोगों को उनके आचरणों के आधार पर दर्जा और सुविधाओं से वंचित करना शामिल होता है। धार्मिक शोषण समाज की समरसता, सद्भाव और समानता को खतरे में डालता है और इसे समाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सुधारों के माध्यम से दूर किया जाना चाहिए।

जयप्रकाश कर्दम की कहानियों धार्मिक शोषण के अनेक चित्र दिखाई देते हैं। उनके कहानी संग्रह ‘तलाश’ की कहानी ‘स्वांग’ के पात्र भुल्लन तबीयत खराब होने के कारण काम पर जा नहीं पाता है। इस कारण भुल्लन को गाँव का मुखिया मारपीट करता है। “भुल्लन गिड़गिड़ाता-मिमियाता है, तड़पता रहा। अपने बीबी बच्चों की दुहाई दे-देकर दया की भीख माँगता रहा, लेकिन मुखिया के लात और घुँसे नहीं रुके। उनका, मुँह, हाथ और पैर बराबर चलते रहे। भुल्लन की माँ-बहन से लेकर उसकी दो बरस की बेटी तक केसाथ अपने लैंगिग संबंध जोड़ता हुआ वह बेतहाशा लात और घुँसे बरसाता

रहा।"[1]मुखिया जो सवर्ण जाति का है, जिसके अंदर अपने जाति का अहंकार कुट-कुटकर भरा हुआ है, वह भुल्लन की बीमारी की परवाह किए बगैर उसे जानवरों की तरह मारता-पीटता रहता है।

ये केवल कुछ उदाहरण हैं, दलितों का शोषण और उत्पीड़न भारतीय समाज में एक सामान्य और गंभीर समस्या है और इसे हल करने के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक और कानूनी परिवर्तन की जरूरत है।

छुआछूत और जातिवाद के बारे में

भारत, विविधता और ऐतिहासिक धरोहर के लिए जाना जाता है, लेकिन यह दुखद है कि इस महान देश में आज भी जातिवाद और छुआछूत जैसी सामाजिक समस्याएँ अभी तक मौजूद हैं। ये समस्याएँ सामाजिक अन्याय, वर्णवाद और भेदभाव के प्रमुख कारक हैं, जिनके कारण लाखों लोग अपनी आजीविका, स्वतंत्रता और सामाजिक उन्नति से वंचित रहते हैं। इस अध्याय में, हम जातिवाद और छुआछूत की समस्या के पीछे के कारणों, प्रभावों और इससे निपटने के उपायों पर विचार करेंगे। जातिवाद भारतीय समाज के आधारभूत संरचना में से एक है। यह विचारधारा मान्यता करती है कि लोगों का समाज में स्थान उनकी जाति, धर्म, जाति या अन्य ऐसे कारकों के आधार पर निर्धारित होता है। इस प्रकार के विचारधारा के अनुसार, समाज विभाजित होता है और वर्गीय असमानता और अन्याय की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह विचारधारा वर्णव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहाँ वर्णों को वर्गीकृत किया जाता है और सभी के लिए समान अवसर और स्थान नहीं होता है। जयप्रकाश कर्दम एक प्रमुख दलित साहित्यकार थे और उनकी कहानियों में छूछाछूत जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को व्यापक रूप से दिखाया जाता है। उनके लेखन के माध्यम से, वे दलित जीवन की अनुभवों, उनके संघर्षों और सामाजिक विभेद को पेश करते हैं। जयप्रकाश कर्दम की कहानियों में दलितों के सामाजिक और आर्थिक उत्पीड़न,अस्पृश्यता, उच्च जातियों के सामाजिक असामान्यता, और जातिवाद के खिलाफ लड़ाई जैसे मुद्दे उजागर किए जाते हैं। उनकी कहानियां दलित समाज के व्यक्तियों के जीवन के विभिन्न पहलुओं, संघर्षों और सपनों को दर्शाती हैं। जयप्रकाश कर्दम की कहानियों में छूछाछूत और दलित समाज के मुद्दों को एक मजबूत साहित्यिक ढंग से उजागर किया जाता है, जो उनके लेखन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

दलित महिला की पीड़ा के बारे में

सामाजिक मान्यता, स्वतंत्रता और न्याय की अभाव से दलित महिलाएँ भीतरी और बाह्य दोनों तरीकों से दुखी होती हैं। उन्हें अपमानित, अलग, और अस्थिर महसूस कराया जाता है। दलित महिलाओं को समाज में उच्चतम पदों और निर्णायक स्थानों तक पहुंचने में भी कठिनाईयाँ आती हैं। राजनीति, प्रशासनिक पद, और अन्य सार्वजनिक स्थानों में उन्हें अनुचित रूप से बाधित किया जाता है। यह समस्या उनकी प्रगति और समाज में भागीदारी को रोकती है और उन्हें सामाजिक और आर्थिक

रूप से पिछड़ा रखने में मदद करती है। दलित महिलाओं की पीड़ा और संघर्ष सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता को दर्शाती है। सामाजिक जागरूकता, संघर्ष और सामाजिक न्याय के लिए आवाज उठाना, दलित महिलाओं के अधिकारों के प्रोत्साहन और संरक्षण के लिए अभियान चलाना आवश्यक है। सरकार और समाज को उचित संरक्षण कानूनों के लागू होने का सुनिश्चित करना चाहिए और दलित महिलाओं को उनके अधिकारों और

सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाने के लिए सामाजिक एवं शिक्षात्मक अभियानों को संचालित करना चाहिए। साथ ही, सभी समाज के सदस्यों को एकता और समरसता की भावना को बढ़ाने के लिए प्रयास करना चाहिए ताकि हम एक जाति, धर्म और लिंग के पार एक समतामूलक समाज की ओर प्रगति कर सकें। 'मूवमेंट' कहानी के माध्यम से जयप्रकाश कर्दम दलित आंदोलन में कार्यकरनेवाले कार्यकर्ताओं की दोहरी भूमिका पर सवाल उठाते हैं। एक तरफ दलित आंदोलक दलितों पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं,तो दूसरी तरफ वे अपने ही घर की स्त्रियों पर अन्याय करते हुए नज़र आते हैं। समाज के लिए काम करते समय वह घर के लिए अधिक समय नहीं दे पाता। स्त्री - पुरुष की बराबरी को वह भाषण देता है। लेकिन पत्नी सुनीता को कभी अपने साथ नहीं लेकर जाता। सुनीता को घर में दम घुटता है। सुनीता इसके बारे में अपने पति के साथ प्रश्न करती है। डॉ. कर्दम इस कहानी के माध्यम से दलित स्त्री के दर्द को आवाज़ देने का काम करते हैं। सुनीता का घर में दम घुटता है। इसलिए दोनों के बीच कहा सुनी होती है। वह कहती है :- "पर रखना तो चाहते हो नौकर की तरह इस चारदीवारी के अन्दर ही। नहीं तो कितनी बार अपने साथ ले गए हो तुम? बाहर के लिए तो सिर्फ तुम हो, मैं तुम्हारे परिवार और मेहमानों की आवभगत और सेवा के लिए हूँ।" ९४! डॉ. जयप्रकाश कर्दम इस कहानी के माध्यम से दलित स्त्री के मन की त्रसित आवाज़ को स्पष्ट करती है। सुनीता अपने पति से सवाल करती है कि - "क्या यही प्रगतिशीलता है तुम्हारी कि बाहर जाकर अन्याय और असमानता के खिलाफ भाषण झाड़ें और घर में खुद असमानता का व्यवहार करो। यही मूवमेंट है तुम्हारी ।""" दलित स्त्री की इच्छा - आकांक्षायें अब बदल गयी है। वह भी घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर समाज के लिए काम करना चाहती है। दलित स्त्री की कर्तव्य भावना स्पष्ट होती है। 'मूवमेंट' कहानी के माध्यम से डॉ. जयप्रकाश कर्दम दलित कार्यकर्ताओं को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि जिस अन्याय के खिलाफ बाहर की दुनिया से लड रहे हैं उसे अपने घर और समाज में भी दूर करनी चाहिए। इस कहानी में एक दलित कार्यकर्ता द्वारा किये जा रहे दोहरे संघर्ष की व्यथा है। लेकिन इसके साथ और एक महत्वपूर्ण बात है कि स्त्री अपने हक के लिए और समानता के लिए विद्रोह कर रहे हैं।

डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने 'मूवमेंट' कहानी के माध्यम से जो महिलाओं के लिए तैंतीस प्रतिशत आरक्षण दिया है इसका पर्दाफ़ाश किया है।

आशा और निराशा के बारे में

दलित जीवन में आशा और निराशा दो विपरीत भावनाएँ हैं जो उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रतिध्वनित होती हैं। यह दोनों भावनाएँ उनके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, और सांस्कृतिक अनुभवों के कारण उत्पन्न होती हैं। दलित जीवन में आशा की भावना उन्हें आगे बढ़ने की, प्रगति की, और अवसरों की ओर धकेलती है। वे आशा करते हैं कि वे समाज में सम्मान पाएँगे, उन्हें न्याय मिलेगा, और उन्हें अपने विशेष योग्यताओं के आधार पर मौका मिलेगा। आशा उन्हें सामरिक बनाती है, उनकी मेहनत और संघर्ष के पीछे कीमत मानने में मदद करती है, और उन्हें अपने लक्ष्यों और सपनों के प्रति प्रेरित करती है। हालांकि, दलित जीवन में निराशा की भावना भी गहराई से प्रतिध्वनित होती है। यह उन्हें सामाजिक असमानता, शोषण, और न्याय की कमी का आभास कराती है। वे निराश हो जाते हैं जब उन्हें सामाजिक स्थान, व्यापारिक अवसर, शिक्षा, और सरकारी योजनाओं तक पहुंचने में बाधा आती है। निराशा उन्हें अपने सामाजिक और आर्थिक संकटों के सामने अकेला महसूस कराती है और उन्हें निराश करके उनके जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। दलित महिलाओं के जीवन में भी आशा और निराशा की भावनाएँ प्रभावित होती हैं। वे आशा करती हैं कि वे स्वतंत्रता, स्वावलंबन, और सम्मान प्राप्त करेंगी। उन्हें आशा होती है कि वे अपने आप को पढ़ाई, काम करने, और सोशल चैंपियन बनाने के माध्यम से समाज में प्रभाव डालेंगी। दुर्भाग्यवश, दलित महिलाएँ भी अक्सर निराशा का अनुभव करती हैं। उन्हें सामाजिक स्थान, शोषण, और न्याय की कमी का अनुभव होता है। उन्हें निराशा होती है कि वे परिवार, समाज, और सरकारी निकायों द्वारा न तो पहचाने जाएँ और न ही उन्हें उनके अधिकारों की प्राथमिकता दी जाए। निराशा उन्हें अपने सपनों को तोड़ने पर मजबूर करती है और उन्हें जीवन में उबकाई और सामर्थ्य की कमी का सामना करना पड़ता है। यहां ध्यान देने योग्य है कि आशा और निराशा दलित महिलाओं के जीवन में एक साथ मौजूद होती हैं। यह अवस्था उन्हें आगे बढ़ने की ऊर्जा प्रदान करती है, लेकिन निराशा उन्हें स्थिरता की आवश्यकता समझाती है। यह उन्हें संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है, लेकिन निराशा उन्हें सुनहरे भविष्य के प्रति आशाओं को छलनी करती है। यह उन्हें मजबूत बनाती है, लेकिन निराशा उन्हें अस्थिरता और निराशा की ओर खींचती है।

इस प्रकार, दलित महिलाओं का जीवन आशा और निराशा के बीच एक अटल संघर्ष का जीना होता है। वे सामरिक और सामाजिक सुधार के माध्यम से अपने जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करती हैं। उन्हें संघर्ष के बावजूद भी सामरिकता और सामान्यता की ओर बढ़ने की आशा बनी रहती है। उनकी दर्दभरी कहानियों, कविताओं, और आंदोलनों में आशा और निराशा के आभास छिपे होते हैं, जो हमें एक न्यायसंगत, समरसित और समर्पित समाज की ओर आग्रह करते हैं।

दलित महिलाओं की आशा और निराशा का विचार करते समय, हमें उनके समर्पण, और समाज सेवा के प्रति संकल्पबद्धता का सम्मान करना चाहिए। हमें दलित महिलाओं के संघर्षों को सुनना चाहिए, उनकी समस्याओं को समझना चाहिए और उनके साथ एक इंसानी और समरसतापूर्ण समाज के निर्माण में योगदान देना चाहिए। इस प्रकार, हम समाज में सामरिकता, न्याय, और समता के मूल्यों की प्रोत्साहन दे सकते हैं और एक शोषणमुक्त समाज की ओर साथ चल सकते हैं।

जयप्रकाश कर्दम की कहानी में आशा और निराशा' के चित्र दिखाई देते हैं। इस कहानी की नायिका दलितों के निराश जीवन में एक आशा बनकर उभरती है। डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने 'सौँग' कहानी में दलित चेतना की चर्चा की है। 'सौँग' कहानी खेतीहर मज़दूर के शोषण की कहानी है। मज़दूर के सामान्य शोषण के पीछे केवल मालिक की सवर्ण मानसिकता है। गांव में खेतीहर मज़दूरों की संख्या में अधिसंख्यक मज़दूर हिन्दू समाज व्यवस्था में अवर्ण कहे जानेवाले व्यक्ति होते हैं।

निष्कर्ष

दलित चेतना की सार्थक अभिव्यक्ति के कारण छप्पर' हिन्दी का पहला दलित उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में अपने समय और यथार्थ की सूक्ष्म पकड़ मौजूद है। चन्दन, कमला और रजनी जैसे नई पीढ़ी के पात्रों के संघर्ष और त्याग द्वारा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन की आकांक्षा की अभिव्यक्ति हुई है तो हरिया, सुक्खा जैसे पात्रों द्वारा पुराने पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण किया गया है। शिक्षा को दलित मुक्ति और सामाजिक- सांस्कृतिक परिवर्तन का मुख्य आधार मानते हुए यह उपन्यास अम्बेडकरवाद के साथ-साथ बौद्ध दर्शन और गांधीवाद का भी सहारा लेता है। दलित आन्दोलन के भीतर जाति बनाम वर्ग, स्वानुभूति बनाम सहानुभति, दलित बनाम गैर-दलित जैसे प्रश्नों को भी इस उपन्यास में लेखक ने एक सार्थक दिशा देने की कोशिश की है। इस लिहाज से भी यह एक महत्त्वपूर्ण दलित उपन्यास कहा जा सकता है। अपनी कुछ सीमाओं के बावजूद हिन्दी में दलित उपन्यासों की रचना हेतु मजबूत पूर्वपीठिका तैयार करता है।

संदर्भ

1. खुशवाह सुभाष चंद्र, जातिदंश की कहानियाँ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

2. वाल्मीकि ओमप्रकाश, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017

3. भारती कंवल, दलित विमर्श की भूमिका, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2013

4. कर्दम जयप्रकाश, दलित साहित्य एवं चिंतन समकालीन परिदृश्य, अमन प्रकाशन, कानपुर

5. डॉ. एन. सिंह, तलाश, लेखक डॉ. जयप्रकाश कर्दम, विक्रम प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्कार 2005,

पृष्ठ 9.

6. कमलेश्वर, तलाश, लेखक डॉ. जयप्रकाश कर्दम, विक्रम प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्कणर 2005, पृष्ठ

16.

7. ओमप्रकाश वाल्मीकी, दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र, पृष्ठ 29.

8. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, तलाश, विक्रम प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्कार 2005, पृष्ठ 94.

9. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, खरोंच, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्कणर 2014, पृष्ठ 10.

10. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, तलाश, विक्रम प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्कणर 2005, पृष्ठ 35.

11. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, छप्पर, राहुल प्रकाशन, दिल्ली, संस्कार 2012, पृष्ठ 34.

12. डॉ. जयप्रकाश कर्दम, खरोंच, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्कणर 2014, पृष्ठ . 78.